© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 01 | January – March 2018

# हिंदी उपन्यासों में कथ्य: एक विवेचना

[1]अर्जुन सिंह , शोधार्थी , हिंदी विभाग, डी एस बी परिसर , कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल
[2] डॉ शिरीष कुमार मौर्य , हिंदी विभाग, डी एस बी परिसर , कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल

**सार**

कथ्य शब्द संस्कृत की 'कथ्' धातु से बना है, जिस का अर्थ है 'कहना'। साहित्यकार युगीन परिवेश से साक्षात्कार करके अपने समाज का निरीक्षण करता है और उचित-अनुचित को ध्यान रखते हुए समाज के समुचित विकास की ओर संकेत करता है। साहित्यकार स्रष्टा एवं दृष्टा बनकर समाज की संभावनाओं को लक्ष्य करके अपने पाठकों से जो कुछ कहता है, वही उसके साहित्य का कथ्य कहलाता है। समीक्षक इनके अनुशीलन द्वारा ही कृति का विश्लेषण करता है। कथ्य क्यास होता है- समीक्षा के क्षेत्र में यह विवाद का विषय बना हुआ है। उसको अलग-अलग किस प्रकार पहचाना जा सकता है। कृति में कथ्य और शिल्प दोनों में से किस का महत्त्व अधिक है और इनका संबंध कैसा और क्याज है। वास्तव में देखा जाए तो कृति में कथ्य और शिल्प दोनों का अपना-अपना महत्त्व है, क्योंकि कथ्य और शिल्प के द्वारा ही कृति के स्वरूप का निर्माण होता है। इनके पारस्परिक स्वरूप के विवेचन-विश्लेषण के लिए लेखक की मनोवृति और परिस्थिति को जानना अनिवार्य है।

ISSN : 2348-5612 © URR
9 770234 856124

**मुख्य शब्द :** कथ्य, समीक्षा, पारस्परिक आदि।

**प्रस्तावना**

डॉ० शिव शंकर पाण्डेय ने कथ्य के स्वरूप को मूल संवेदना से जोड़ते हुए कहते हैं। रचना की मूल संवेदना ही उसका कथ्य है। यह उन व्यक्तिगत या समष्टिगत अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जिन्हें आज का साहित्यकार जीता और भोगता है। इसका संबंध जीवन की उन यर्थाथ स्थितियों से होता है, जिनके भीतर मामूली से मामूली आदमी सांस लेता है। . . . आज का लेखक समग्र जीवन को उसकी सारी अच्छाईयों, बुराईयों सहित अपनी रचना में प्रस्तुत करता है। युग की आवश्यकता के अनुरूप उसे ढालता है। "डालास्ट्रीम" ने थीम (कथासूत्र) को विषय (सबजैक्ट) स्थिति (सिचुएशन) और कथावस्तु से परिभाषित करते हुए उसे दिशा निर्देशक विचार, अभिप्राय, उपदेश और निश्चित उक्ति कहा है। कथ्य का शब्दिक अर्थ कहने योग्य या कथनीय या मूल भाव माना जाता है। इस प्रकार कथ्य और कथानक दोनों में अंतर है।.... कथानक एक लघुकथांग है, परंतु उसे कथ्य कहना संकुचित अर्थ का द्योतक है, जिसके द्वारा कहानी बुनी जाती है, जबकि कथ्य कहानी की आंतरिक अनुभूति से संबंधित होता है। कथ्य का अर्थ है- किसी वस्तु के आंतरिक सूक्ष्म भाव। यह लेखक का संवेदन है। साहित्यकार की संवेदना अथवा अनुभूति ही कथ्य है। उसकी अनुभूति अभिव्यक्ति के क्षणों में अमूर्त होती है। वह इसे मूर्त रूप देने के लिए बाह्य उपादानों, साधनों का आश्रय लेता है, जिसे शिल्प कहते हैं।

साहित्यकार समाज में रहते हुए समाज की अच्छाइयों-बुराईयों की ओर भी ध्यान देता है। वह अनुचित का खंडन करते हुए अच्छाइयों का पोषण करता है। इस प्रकार उसका लक्ष्य

आर्दशात्मक बन जाता है, जब साहित्यकार अपने साहित्य में संत्रास, निरर्थकता, निराशा, कुरीतियां आदि की अभिव्यक्ति करता है तब उसका साहित्य यथार्थपरक हो जाता है। अतः कथ्य आदर्श और अनादर्श से जुड़े तथ्यों की संतुलित अभिव्यक्ति से जुड़ा होता है। कथ्याभाव में कला अथवा साहित्य का अस्तित्व निमूल माना जाता है। कोरा कलावाद या रूपवाद भले ही दिखाई पड़ जाए। सामाजिक जीवन से तिरस्कृत होकर साहित्यकार शिल्प का जाल बुनता है। कथ्य के अभाव में साहित्य या कला को जीवित रहना उसी प्रकार असंभव है जिस प्रकार सूक्ष्म शरीर सहज और सरल परिवेश से पोषित होता है। इस प्रकार साहित्य में कथ्य को महत्व देते हुए इसे साहित्य की आत्मा माना जा सकता है। परंतु विचार व्यक्तिगत भी हो सकते हैं। जिस प्रकार आत्मा पूरे शरीर में समाहित रहती है, ठीक उसी प्रकार कथ्य संपूर्ण कृति में समाहित रहता है। "कथ्य" शब्द अत्यंत व्यापक है। इसकी व्यापकता को केंद्रित करके विभिन्नप विद्वानों ने पर्यायवाची शब्द और आयाम निर्धरित किए हैं। वर्ण्य, विषय-वस्तु, भावपक्ष और विचार शब्द कथ्य के लिए प्रयोग किए जाते हैं। अर्थ भावना की दृष्टि से तो किसी भी पर्याय का प्रयोग किया जा सकता है। किंतु कविता के लिए विशेषकर कथ्य का प्रयोग होना उचित है। कथ्य जहां एक ओर विषय तो दूसरी और वर्ण्य के अर्थ का संकेत देता है।

**कथ्य के पक्ष/ आयाम**

लघुकथा का कथ्य बहुआयामी होता है। कविता की संवेदना बहृ्स्तरीय होती है। कहीं लेखक ने भौतिकवादी जीवनशैली के कारण निज जीवन में व्याप्त अवसाद, तनाव व आत्म संघर्ष को उकेरा है, तो साथ ही राजनैतिक, सामाजिक अवधरणा के विकृत रूप को उजागर किया है। इस नवीन जीवन शैली की भागमभाग, आपाधपी से छटपटाती मनोस्थिति के बिम्ब है, तो कहीं व्यवस्था से अंर्तजन्म कुरूचियां और घिनौनी स्थितियां हैं। कहीं बिखरित होते मूल्यों का रोना-धोना है, तो कहीं सामाजिक परिवेश की विसंगतियों का लेखा जोखा है। कथ्य में यदि एक ओर आक्रोश, विद्रोह और समूचे ढाँचे को परित्याग करने का उद्घोष है, तो दूसरी ओर मानवीय सहृदयता का अंकन भी अनिवार्यतः रहता है। समसरमयिक कविता की जहां तक बात है यह किसी भी दृष्टि से उपर्युक्त संवेदनाओं से रिक्त नहीं है। अपितु व्यक्ति से लेकर परिवार और समाज से होती हुई, राजनीतिक, धर्मिक स्त र तक की संवेदनाओं को इस क्षेत्रा की कविता में उन्मुक्त एवं विराट अंकन मिला है। कथ्य के मूलाधर राजनीति, धर्मिक, संस्कृति, पारिवारिक इत्यादि पक्षों से जुड़ी संवेदनाओं के संदर्भो को सैद्धांतिक मान्यताओं के आइने में देखने का प्रयास करेंगे ताकि आगे इन संवेदनाओं के व्यवहारिक पक्ष को उचित एवं सटीक ढंग से प्रस्तुत किया जा सके।

- वैयक्तिक आयाम
- पारिवारिक आयाम
- सामाजिक आयाम
- राजनीतिक आयाम
- आर्थिक आयाम
- धार्मिक आयाम
- सांस्कृतिक आयाम

**संवेदना तथा कथ्य**

यद्यपि अनुभूति लेखक के अंतःकरण की ही एक प्रक्रिया है, तथापि उसका संबंध बाह्यकरण एवं सामाजिक परिवेश से भी है। साहित्य सृजन करने वाला चाहे किसी भी पात्र की आंतरिक अनुभूतियों की अभिव्यंजना करे, उनमें भी उसके नीरस व्यक्तित्व की झलक विद्यमान रहती है। इतना ही नहीं वह जिन भावनाओं को अपने सहित्य में सर्वोच्च देता है, वे वस्तुतः उसके व्यक्तित्व एवं जीवोन्नुभूति ही है।

**विषय-वस्तुः-**

विषय वस्तु विषय के प्रति दृष्टिकोण से जुड़ी होती है। विषय वस्तु से भी यही भाव परिलक्षित होता है। विषय का शब्दकोषीय अर्थ है- कोई ऐसी बात जिसके संबंध में कुछ कहा, या सोचा जाये। वस्तु का यही तात्पर्य अमूर्त भावों के मूर्त रूप से है। अतः जिन संवेदनाओं का विचारोपरांत लेखक शब्दों का परिधन पहना देता है, वे विषय बन जाती है। विषय वस्तु से ही कथ्य का निर्धरण होता है।

**वर्ण्य विषय :-**

वर्ण्य विषय लेखक के ध्येय का निर्धरण करता है। वर्ण्य से अभिप्राय है- जिसका वर्णन किया गया हो, जो वर्णन करने योग्य हो अथवा जिसे लेखक या लेखक अपनी रचना के माध्यम से समझ पाया हो तो विस्तार से ब्यान करना चाहता हो। इस प्रकार कविता में जो कहा जाता है वह वर्ण्य विषय है। अनावश्यक विस्तार का त्याग करके ही वर्ण्य विषय की प्रस्तुति में गागर में सागर भरने का सफल प्रयास किया जाता है।

**भाव पक्षः-**

केन्द्रिय भावों से जुड़ी संवेदना को भावपक्ष के अंतर्गत लिया जाता है। कथ्य को भाव पक्ष भी कहा जाता है। भाव के बारे में कहा गया है कि भाव वह है जो मन में महसूस किया जाये। इसलिए भाव पक्ष का सीध-सा अर्थ हुआ-विविध भावों, संवेगों अथवा अनुभूतियो की लामबंदी। भावपक्ष लघुकथा का अंतरंग पक्ष माना गया है। इसे लघुकथा की "आत्मा"? कह सकते हैं। भावपक्ष की सर्वश्रेष्ठ परिणती रस निष्पति है। भाव रस-कोटि के चरम पर पहुंच कर ही आस्वाद्य बनते है। फलतः कथ्य के अंतर में भाव रस की ही प्रतिष्ठता होती है। रस निष्पति मुख्यतः भावना के परिपोषण और उसके आस्वादन पर अवलम्बित है। अतः स्पष्ट है कि कविता भावों का सागर है। इन्हीं भावों और संवेगों का समन्वित रूप ही कथ्य कहलाता है।

**निष्कर्ष**

कथ्य कविता की आत्मा और शिल्प कविता का शरीर माना गया है। इन दोनों के समन्वित रूप ही कविता को सजीवता, रोचकता और प्रभावोत्पादकता प्रदान करते हैं। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय सत्यप्रकाश भारद्वाज कृत "आशा की किरणें? में "कथ्य" के विवेचन विश्लेषण के उपरांत शिल्प की समीक्षा की जा गई है। परिवेश से उत्पन्न भावों के साथ जब कल्पना का उचित समन्वय हो जाता है तो कविता का सृजन होता है। इन संवेदनाओं को शब्दों का चोला पहनाना पड़ता है तभी इन्हें स्थायित्व प्राप्त होता है। संवेदनाओं को अस्तित्त्व प्रदान करने के लिए जिन तत्त्वों का सहारा लेना पड़ता है। उन सभी का विवेचन शिल्प" के अन्तर्गत किया जाता है। बात को कहने के ढंग या प्रकार को उसका शिल्प पक्ष कहा जाता है।

शिल्प के ऊबाऊ प्रयोग से कथ्य पंगु हो जाता है। शिल्प की कथ्य को प्रगतिशील, प्रभावशाली और रोचक बनाता है। इस रोचकता को शिल्प पर केन्द्रित माना जाता है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**


[1] गायकबाड (प्राचार्य, डॉ.) नाना, रामदरश मिश्र का गद्य-साहित्य, गुजैनी, कानपुर-22, प्रथम संस्करण: 2007

[2] गोस्वामी यशवंत , रामदरश मिश्र के उपन्यासों में गृहपरिवार, प्रकाशन नया साहित्य केंद्र, सोनिया बिहार, दिल्लीर-94, प्रथम संस्करण: 2005

[3] गोहिल मनीश, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के उपन्यास : कथ्य और शिल्प, प्रकाशन पल्लसब, दिल्ली8-009], प्रथम संस्करण:2007

[4] चब्हाण (डॉ.) बी. पी., रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में ग्राम्य जीवन, चिंतन प्रकाशन, हंसपुरम, कानपुर-208 02, प्रथम संस्करण: 2004

[5] चिकुडेंकर (डॉ.) प्रकाश शंकरराब, रामदरश मिश्र के उपन्यास्रों में समाज-जीवन, नमन प्रकाशन, नयी दिल्लीक-02, प्रथम संस्करण: 2002

[6] चौहान (डॉ.) महावीर सिंह, रामदरश मिश्र की सृजन-यात्रा, बाणी प्रकाशन, नयी दिल्लीन-0 002, प्रथम संस्करण: 99

[7] जंघाले (डॉ.) झेड. एम., रामदरश मिश्र के उपन्यासों में यथार्थ, विकास प्रकाशन कानपुर-208027, प्रथम संस्करण: 2009

[8] जाधब (डॉ.) सुब्राव नामदेब, रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ : विविध आयाम, साहित्यसागर, यशोदानगर, कानपुर-2080], प्रथम संस्करण: 2009

[9] तिबारी नित्यानन्द, रचनाकार रामदरश मिश्र, राधा पब्लिकेशन्स, नयी दिल्ली0- 0 002, द्वितीय संस्करण: 1997

[10] दबे अमि, कहानीकार रामदरश मिश्र, गरिमा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण: 2004